IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामिण जीवन एवं किसान प्रेमचंद और रामदरश मिश्र के साहित्य में

डॉ. राजेन्द्र कुमार एसण चौधरी
सहायक अध्यापक (कर्यकारी)
तुलनात्मक साहित्य विभाग (हिन्दी केन्द्र)
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालयए सुरत-395007

भारत कृषि प्रधान और गाँव प्रधान देश है, भारत की सत्तर प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है। इसलीए भारत के बारे में यह भी कहा जाता है कि वास्तविक भारत गाँवों में बसा हुआ है। यह ग्रामिण परिवेश विविधताओं का संगम है। भारत के हर गाँव की संस्कृति और भाषाएँ अलग-अलग है। यहाँ तक की घर बनाने की शैली में विविधता देखने को मिलती है। उसकी चर्चा करते हुए डॉ. ज्ञानचंद्र गुप्ता ने श्स्वातंत्रत्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतनाश में लिखा है कि – श्उनकी रीति-नितियाँ, उनकी परंपरा और मान्यताएँ, उनकी रोजी-रोटी कमाने का तौर तरीके आदि सभी कुछ तो भिन्न है।श डॉ. शिवाजी सांगोके ने अपनी किताब श्हिन्दी साहित्य मे ग्रामिण चेतनाश में लिखा है - ष्भारतीय जीवन तथा सभ्यता का मूल स्त्रोत कृषि है और उसका विस्तार ग्रामीण जीवन में ही परिलक्षित होता है।ष आज गाँव की तुलना में शहरों का विकास तेजी से हो रहा है लेकिन फिर भी इन ष्तमाम शहरी विकास और औद्योगीकरण के बावजूद मानव जाति का अधिकांश गाँवों में रहता है।ष[1]

भारतीय ग्रामिण जीवन के दृश्य में आजादी के बाद भी विशेष परिवर्तन नहीं हो पाया है। आज भी भारत के गाँव वही समस्याओं से जूझ रहे हैं, जिन समस्याओं से आज़ादी से पहले जूझ रहे थे। शहर की तुलना में गाँव आज भी गरीब है, गाँव शहर के मुकाबले रोजगार देने में नाकामयाब है। आज भी कितने ही गाँव के गाँव विस्थापित होकर शहर में रोजगारी की तलाश में आते है। कई लोग मौसमी पलायन भी करते है और कई लोग हमेशा के लिए भी। उसके साथ ही बैंको की कई नितियों के बावजूद आज भी गाँव के लोग अपनी आर्थिक समस्या की पूर्ति के लिए शेठ, साहुकार और पूंजीपतियों का सहारा लेते है और समय अनुसार रूपये न लौटाने पर गीरवी रखी हुई, अपनी जमींन और गहने गंवा बैठते है। ग्रामिण जीवन की संस्कृति, रहन-सहन, आचार-विचार, समस्याओं का पूर्ण रूप हमें प्रेमचंद के साहित्य में देखने को मिल जाता है। इसलिए प्रेमचंद को किसानों का महानतम लेखक भी कहा गया है। प्रेमचंद ग्रामिण जीवन में पले है इसलिए उन्होंने गाँव के लोगों का रहन-सहन, खान-पान बारीकी से देखा है, समझा है, उसीका चित्रण अपनी कहानी और उपन्यासों के माध्यम से उबारने की कोशीश की गई है। 1936 में प्रकाशित श्गोदानश को तो किसान जीवन का महाकाव्य कहा गया है। श्गोदानश में किसान जिवन और ग्रामिण जीवन में व्याप्त महाजनी शोषण, जमींदारी शोषण बंधुआ मजदूरी, होली के पर्व का वर्णन आदी समस्याओं का चित्रण है। इसके अलावा श्रंगभूमिश का सूरदास अपनी जमींन के लिए पूंजीवादी वर्ग का विरोध करता है। श्सेवासदनश में भी लगान की समस्याँ है। श्प्रेमाश्रमश में मोसखी खेती का लगान पाँच रूपयें प्रति बीघा है और शिकमी खेती का लगान बारह रूपयें प्रति बीघा है। श्पुस की रातश का किसान हल्कु दीन में मजदूरी करता है, रात में ठंडी में ठीठुरता हुआ अपनी फसल की रक्षा वन्यप्रणिओं से करते हुए अभाव की जीन्दगी जी रहा है। ठंड से बचने के लिए एक फटा हुआ कंबल है और घर में खाने का अनाज नहीं है साथ ही कर्ज से

भी दबा हुआ है। श्समरयात्राश के किसान ऊपर भी तीन गुना लगान का बोज बढ़ गया है। प्रेमचंद के किसान और मजदूरों के बारे में कहा गया है कि ष्कोई एक शत्रु नहीं है वर्ग शत्रुओं की जमात है, वहाँ किसान जीवन की अनेक समस्याएँ हैं, जिनमें प्रमुख लगान है।ष[2]

प्रेमचंद ने जीन समस्याओं का वर्णन किया है, वही समस्यायें आजादी के बाद के उपन्यासकार रामदरश मिश्र के उपन्यासों में भी देखने को मिलती है लेकिन उनके शोषण के रूप में परिवर्तन हुआ है। शोषण का तरीका बदल गया है। जैसे- श्पानी के प्रचीरश उपन्यास में गाँव का मुखिया गाँव के एक आदमी बैजु के साथ आपसी दुश्मनी निकालने के लिए पहले तो मुखिया बैजु को दरोगा के हाथों गिरफ्तार करवाता है, फिर वहीं उसे रिहा भी करवाता है। क्योंकि वह जानता है कि बैजु को जेल से रिहा करवाने के लिए रूपयों की जरूरत पडेगी वह बैजु के परिवार के पास नहीं है इसके लिए बैजू का परिवार मुखिया के पास मदद के लिए जायेगा। जैसे- ष्बैजु की माँ अपनी मोटी - सी हँसुली गले से निकालती हुई बोली मुखिया बाबू, यह हँसुली ही मेरे पास जो कुछ है सो है, इसे गेंदा की शादी में देने के लिए रखा था। मगर ले जाइए। कहीं रखकर रूपये ला दीजिए, बडी मेहरबानी होगी।ष[3] मुखिया वह हँसुली अपने पास ही रख कर पच्चीस रूपये दरोगा को देता है और बैजु को रिहा करवा लेता है। दश रूपये बैजु की माँ को देते हुए कहता है कि सुमेरसर ने मुझे हँसुली के बडी मुश्किल से पचास रूपये दिये उसमें से मैंने दरोगा को चालीस रूपये दिये और दश रूपये लिजिए।

इसी तरह का उदाहरण हमें श्सुखता हुआ तालाबश में भी देखने को मिलता है। जैसे- गाँव का महाजन शामदेव गाँव वालों का शोषण कर रहा है। गाँव वालों पर अत्याचार कर रहा है यह बात किसीसे छूपी हुई नहीं है लेकिन शामदेव के खिलाफ चुप-चाप रहने में ही लोग अपनी भलाई समझते है क्योंकि उनके खिलाफ कुछ बोलने पर वह मुसीबत के समय रूपये देने से मना कर देगा और उनकों दूसरे झमेलों में भी फसाने की कोशीश करेगा। गाँववालों की लचारी के बारे में शिकरीपुर का जैराम कहता है कि- ष्क्या करे ये बेचारे हर साल शामदेव के यहाँ से कर्ज पताई लाते हैं, खेत है और दबे हुए हैं। जब गाँव के पट्टीदार शामदेव से दबते हैं, और सही बात कहना तो दूर रहा और उसकी गलत बात का साथ देते हैं तो इन छोटी जातियों को कौन कहे।ष[4] यहाँ पर हम यह भी देख सकते है कि गाँव की छोटी जातियाँ हंमेशा बडी जातियों के आगे लाचार रहती है।

श्जल टूटता हुआश में स्वतंत्रता बाद जो जमींनदारी उन्मूलन कानून लगाया उसके ऊपर चोट की गयी है- ष्जमींनदारी टूट रहीं है, ये खेत कहाँ जा रहे हैं ६ पैसे वालों को खेत मिल रहा है, पैसे वालों को व्यापार मिल रहे हैं, पद मिल रहैं, शिक्षा मिल रही है, दवा मिल रही.।ष[5]

सरकारी मुलाझीम गाँव वालों पर शोषण कीस तरह करते है उसका चित्रण उपन्यास श्बीस बरसश में देखने को मिलता है। सरकारी योजनाओं के अनुसार गाँव का कोई हरिजन नशबन्दी करवाता है तो जमींन का एक टूकडा दीया जाता है लेकिन उसमें भी भष्ट्रचार व्याप्त है जैसे- ष्जो लोग पैसा दे देते हैं, उन्हें जमींन दी जाती हैए जो नहीं दे पाते उन्हें ऐसी जमींन दी जाती हैए जहाँ पानी भरा होता है।ष[6] यहाँ पर हम जातिवाद और सरकार की योजनाओं का पालन किस तरह से होता उसको देख सकते है।

निष्कर्षतः आज एक्कीसवीं सदी में भी भारतीय ग्रामिण जिवन की परिस्थितियों में कुछ विशेष बदलाव हमें नहीं देखने को मिलते आज भी ग्रामिण जीवन पुराने रूढी-परंपरा के साथ जीन्दगी व्यापन कर रहा है, गाँव में जाति व्यवस्था आज भी कायम है। स्वतंत्रता के पूर्व जो शोषण जमींदारों, और ब्रिटिश सरकार द्वारा होता वह आज शेठ या पूंजीपतियों ने लिया है और ऋण निती बैंकों में प्रवेश कर गई है। आज गाँव से शहर की ओर रोजगार की तलाश में विस्थापित होते हुए लोगों की संख्या बढी है। किसानों के आत्महत्या के किस्से भी दिन ब दिन बढ़ते जा रहे है लेकिन सरकार के पास किसानों की समस्या के लिए समय नहीं है और नहीं मिडिया के पास किसानों के लिए समय है। यह एक बहुत गंभीर समस्या बनकर उभर रही है लेकिन हम सब इस समस्याँ को देख कर भी अनदेखा कर रहे है। चुनाव के समय तो राजनेता किसानों पर बडे-बडे व्याख्यायन देते है, वादे करते है, लेकिन चुनाव खतम होते ही वह नेता कहाँ गायब हो जाते है पता नहीं चलता।

संदर्भ सूचीः-

1. सबलोग, दिसंम्बर-2011, किसन कालजय, पृ.सं.-5
2. कथादेश, मई 2012, पृ.सं- 86
3. रामदरश मिश्र, पानी के प्राचीर, पृ. सं.- 54
4. रामदरश मिश्र, सुखता हुआ तालाब, पृ. सं.- 21
5. रामदरश मिश्र, जल टूटता हुआ पृ. सं.- 224
6. रामदरश मिश्र, बीस बरस, पृ. सं.- 106